फरीदाबाद
मजदूर समाचार
दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा
नई सीरीज नम्बर 79 | जनवरी 1995

नव वर्ष
नव वर्ष हो
यही कामना है।

हरिलाल क्यों हर रोज, गर्मी-सर्दी-बरसात और दिन-रात को अनदेखा कर, मीलों साइकिल दौड़ा कर लोहे के फाटक में हाजरी लगवाने को बेचैन रहता है? शेर खान क्यों प्रोडक्शन टारगेट पूरा करने के लिये एक्सीडेन्ट की चिन्ता छोड़ धड़ाधड़ लगा रहता है? वीणा ग्यारह घन्टे की ड्यूटी के बाद रात आठ बजे क्यों भागी-भागी चलती है? क्यों अनोखे लाल बच्चों की बातों पर थकावट-भरी हाँ-हूँ करते-करते खर्राटे लेने लगता है? कभी-कभार रात को साढ़े बारह - एक बजे नींद टूटने पर रमेश नाइट शिफ्ट में ड्यूटी छूट जाने के लिये कई दिन मातम क्यों मनाता है?

गुनगुनी धूप में चाक घूम रहा है। बढिया गुँथी मिट्टी का आकार बदल रहा है – हाथ उसे घड़े की शक्ल दे रहे हैं। बगल में बच्चे मिट्टी के घर बना रहे हैं।

मटका बनाने की सहज, सामान्य घटना को गौर से बारीकी से देखें तो प्रकृति और इनसानों के रिश्ते के संग-संग मानवों के आपसी सम्बन्धों की एक रोचक तस्वीर उभरती है।

हाथ-पैर हिलाना, दिमाग चलाना इनसानों की सामान्य क्रियायें हैं। प्रकृति में जो है उसे आवश्यकता अथवा लक्ष्य अनुसार बदलना मानव क्रिया का एक केन्द्रिय पहलू है। हमारे प्रयासों का सार उनकी परिवर्तनकारी भूमिका है।

छाँट कर चिकनी मिट्टी खोद कर लाना, उसे कूटना व गूँथना, चाक, कुशल हाथ, घड़े की दिमाग में तस्वीर, बच्चों का देख कर - बच्चों को दिखा कर सीखना - सिखाना मानव क्रियाओं के एक-दूसरे से जुड़ी होने, पीढ़ियों के पार प्रभावित करने, इनमें तारतम्य को दर्शाते हैं। अनुभव - ज्ञान और औजार - साधन के रूप में क्रियाओं के जो अवशेष रहते हैं वे नई क्रियाओं को दिशाबद्ध - धाराबद्ध करते हैं।

मानव प्रयासों की परिवर्तनकारी भूमिका श्रृँखलाबद्ध बनती है।

अन्धेरे में लपटों की चमक सृजित कौतुहल और तपिश जनित भय आग के प्रति मनुष्यों के प्रारम्भिक आवेगों से अधिक नहीं थे। अग्नि की उपयोगिता खोजने और उस पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिये मानवों को जाँच-परख, प्रयोग, अनुभव और कल्पना के मिश्रण वाले अनगिनत प्रयास करने पड़े।

अग्नि पर नियन्त्रण ने खुँखार जानवरों के डर को कम कर आग के गिर्द किस्से-कहानियों और नाच-गानों की बहार को जन्म दिया। गुफाओं से अन्धेरे को भगा कर अग्नि की चमक ने चित्रकारी की रोचक क्रिया के लिये समय में इजाफा किया। सर्दियों में ठिठुर-ठिठुर कर मर जाने पर आग की गर्मी ने पाबन्दी लगा दादा-दादी-नाना-नानी-माता-पिता-पोता-पोती की श्रृँखला में अनुभवों और जीवन को जीवन्त बनाया। भोजन को विभिन्न स्वाद देती अग्नि ने आवभगत को नये रंगीन आयाम दिये।

अपनी कठिनाइयाँ दूर करने और जीवन बेहतर बनाने की मनुष्यों की क्रियाओं, प्रयासों की यह सहज अभिव्यक्ति है। विगत की क्रियाओं जनित अनुभव-ज्ञान-औजार-साधन और उनसे लैस नये प्रयास की ऐसी दिशाबद्धता क्रियाओं के बोझ रूप, प्रयासों के मजबूरी वाले पहलू को दरकिनार करती है। क्रियाओं के लिये बढती संख्या में रोचक पहलुओं - क्षेत्रों का निर्माण - सृष्टि करती प्रयासों की इस धाराबद्धता में जीवन अधिक अर्थपूर्ण बनता है। बड़ी संख्या में उपलब्ध विकल्पों में से इच्छानुसार चुनने की स्वतन्त्रता, क्रिया को जीवन्त बनाती है। बहुआयामी क्रियायें, बहुआयामी जीवन।

लेकिन . . . लेकिन विगत क्रियाओं जनित अनुभव-ज्ञान-औजार-साधन और नई क्रियाओं के सम्बन्धों के निर्धारण में कठिनाइयाँ दूर करने व जीवन बेहतर बनाने की सहज दिशा को चुनौती देता शक्ति - वैभव - कन्ट्रोल का नाला उभरा और बाढ़ आई नदी के समान फैलता सब कुछ को अपने आगोश में लेता, डसता गया। **विगत क्रियाओं की सौगात चक्का, तीरन्दाज के रथ, तोप के पहियों के चक्रव्यूह में फँस गया।**

गीत-संगीत को मार-काट के लिये उकसाने वाले युद्धघोषों और फौजी बैन्ड-बाजों की दल-दल में धकेलने के लिये इनाम और वेतन। चित्रकारी, मूर्तिकला, लेखन को हत्यारे गिरोहपतियों की कुतुब मीनारों - विजय स्तम्भों - मोनुमेंटों - महलों की भूलभुलैया में ढकेलने के लिये जागीरें - ग्रान्ट्स - वजीफे...

टिकट की लाइन में पिता की उँगली पकड़े किले की दीवारों को अपलक देखते बच्चे से **किले ने मूँछों पर हाथ फेरते हुये कहा :** बूढा हो गया हूँ पर कमजोर नहीं हूँ। मुझसे कई गुणा ताकतवर मेरी औलादें मुझे सहारा दिये हैं। और फिर, मेरी दीवारें ही चौड़ी नहीं हैं, बुनियाद भी गहरी है। मेरे दादा, पुराने किले की चिनाई में चूना कम इस्तेमाल हुआ और पत्थर भी बढ़िया तराश कर नहीं लगे क्योंकि उनका निर्माण करवाने वालों के पास नहरें नहीं थी जिसकी वजह से पूरी सख्ती के बावजूद रैय्या से उतना अनाज और बेगार नहीं वसूली जा सकी जितनी मेरा निर्माण करवाने वालों ने नहरों के जाल पर नियन्त्रण की बदौलत वसूली। पता है, मुझे बनाने में पूरे तेरह साल लगे और चौथ व परम्परागत बेगार के संग-संग मेरे नाम पर रैय्या को पत्थर लाने, सड़क बनाने, चूना तैयार करने, नींव खोदने के लिये हर साल एक महीना एक्स्ट्रा बेगार करनी पड़ी। बगावतें बढी . . . बगावतें! चारों तरफ पानी से भरी गहरी खाई, ऊँची-चौड़ी दीवारें और तोप। आह! मेरे बच्चे इनका महत्व भूल गये हैं, मुझे पुराने ख्याल का कहते हैं...

. . . शान्तिपुर इन्डस्ट्रियल एरिया में बैडईयर फैक्ट्री को घेरे **काँटेदार तार बोला :** इस दुनियाँ के बाहर से आये हो तो भी मेरे पार देखने पर तुम्हें कुछ दिखाई नहीं देगा। मशीनों की चाकरी करते इनसानों के झुन्ड को फैक्ट्री अपने आवरण में छिपाये रखती है। और फिर, मैं तो चारदीवारी का प्रतीक, सिम्बल मात्र हूँ। वाच टावर, फ्लड लाइट, सेक्यूरिटी गार्ड, सुपरवाइजरों जैसे पुराने औजारों के संग-संग वीडियो कैमरे और आटोमैटिक अलार्म के तारों से जुड़ी रैपिड एक्शन फोर्स, ब्लैक कैट कमान्डो, इलीट फोर्स की सूचना इस प्रतीक की शक्ति का तुम्हें अहसास कराने के लिये पर्याप्त होनी चाहिये। खैर। पारदर्शिता,

(बाकी पेज तीन पर)

एक मनी आर्डर स्लिप

प्यारी चैंचल,

कल रात फिर में 'राग दरबारी' का पहला अध्याय पूरा किये बिना ही गहरी नींद सो गई। पत्थर की तरह सोई, पता नहीं कोई सपना आया भी कि नहीं। उठते ही पिताजी की याद आई।

तनखा देर से मिली इसलिये मनी आर्डर भेजने में देर हो गई। फीस जमा करके परीक्षा जरूर देना।

माताजी को प्यार।
सरिता

जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे दो हजार मजदूर अगर हर महीने दो-दो रुपये दें तो इस अंक की तरह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद -121001 (यह जगह बाटा चौक के पास है)

खुद से बात करना, अपने आप से कहानी कहना हम सब की आदत में शुमार है। लेकिन जब-तब यह कहानियाँ थम जाती हैं – अधिक तकलीफदायक अथवा ज्यादा बेतुकी होने की वजह से या कोई प्रतिक्रिया न मिलने के कारण। अपने किस्सों के बिखरे तारों को पिरोने के लिये इस पन्ने का इस्तेमाल करें। और फिर यहाँ अपनी बात कहना बचत भी लिये है। आपको अपनी कथा छपवाने के लिये कोई पैसे खर्च नहीं करने पड़ेंगे।

पूरबले कर्मों का फल

हम गरीबों, पिछड़ों, दलितों, कुचलों में बर्दाश्त करने की बेहद ताकत है। किसी भी अन्याय के खिलाफ बगावत का हमारा मन नहीं बनता। कोई व्यक्ति बागी हो जाता है, मगर सामुहिक बगावत गायब रहती है। इसकी वजह है 'पूरबले कर्मों के फल भोगने की' हमारी बेबसी की मानसिकता। हजारों पीढ़ियों से हमको सुझाया-बताया जा रहा है चन्द सवालों के माध्यम से इस बेबसी को। 'इस गरीब परिवार में ही क्यों पैदा हुये, बिड़ला-टाटा के क्यों नहीं?' 'कोई बच्चा जन्म से ही लंगड़ा-लूला क्यों पैदा होता है?' 'तपे सो राजा, राजा सो नारकी।' पुनर्जन्म का सिद्धान्त है। इसी सबने हमको बर्दाश्त की – समर्पण की इस हद तक पहुँचा दिया है। जान लीजियेगा, ये शासकों-शोषकों द्वारा थोपी हुयी कूटनीतिक प्रचार की ऐसी चाल है जिसने हमको खुद ही दण्ड भोगने में आत्म समर्पित बना दिया है। सच्चाई दूसरी ही है।

हर नारी खेत की तरह है। हर खेत को धरती-मिट्टी खाद, पानी, गर्मी आदि से तैयार होती है। इसमें जैसा स्वस्थ बीज बोया जाता है, अंकुरित होता है। धरती बंजर हो या बीज खराब हो तो उगता नहीं। नर बीज बोता है। नर-नारी के इस मिलन से ही सन्तान पैदा होती है। सन्तान का शरीर माता-पिता के शरीर के गुण-दोष लेकर पैदा होता है। गर्भ काल के खान-पान रहन-सहन और आचार-विचार का असर सन्तान में प्रकट होता है। नानी-नाना और दादी-दादा के भी लक्षण इनमें प्रकट होते हैं। यह सब शारीरिक प्रक्रिया का परिणाम है। इसमें कौन, कहाँ, क्यों और कैसा पैदा होने का सवाल ही गलत है। प्रकृति का तकाजा यही है। इससे अलग जातपांत, पंथ-मजहब, अमीरी-गरीबी आदि के फर्क तो समाजार्थिक राजनीति के मनुष्यों द्वारा बनायी गयी व्यवस्थाओं के कारण हैं। हम स्वीकार किये हुये हैं सो चल रहा है। अगर बदलाव के लिए कमरें कसें तो सब बदल जाये।

हम जो कुछ भोग रहे हैं वह किन्हीं अज्ञात रहस्यात्मक कर्मों का फल नहीं है। यह सब हमको माता-पिता द्वारा दादाइलाही विरासत में मिला है। नानी-नाना और दादी-दादा के विचार-संस्कार माता-पिता के बजरिए हममें संचरित हुये हैं और इन सबका इतिहास भी भूत बनकर हमारे साथ है। हम भी भावी पीढ़ी के माता-पिता हैं और फिर नानी-नाना तथा दादी-दादा बनते हैं। हमारा इतिहास, विचार-संस्कार और हासिल उनका भूत बनकर पिंड पकड़ेगा। इन तीनों पीढ़ियों का क्रम बना रहता है। विचार-संस्कार-व्यवहार चलता रहता है। यही ज्ञान भावना में उतरकर कर्म को निर्देशन देता है। पूर्व पीढ़ी पूर्वजन्म है तो भावी पीढ़ी पुनर्जन्म। अगर इस ज्ञान को हम आत्मसात् करके अपनी भावना-धारणा में उतार लें तो सांस्कृतिक क्रांति सम्पन्न हो गयी जानें। हमारी बेबसी की मानसिकता खत्म हो जाये। अन्याय सहन न करके बलिदान की हद तक बगावत करें क्योंकि अपनी सन्तान के रूप में हमको ही इस बलिदान का सुखद व आनन्दप्रद परिणाम भोगना है। हम अमर हैं, थे, हैं और रहेंगे। मनुष्य की यह अमरता, इतिहास सम्मत और विज्ञान द्वारा प्रतिपादित सच्चाई है। पूर्व पीढ़ी के सम्मान और भावी पीढ़ी के निर्माण में हमको सामुहिक बगावत की चेतना से काम करना है चूंकि व्यक्ति का अस्तित्व सामाजिक परिवेश में ही है, व्यक्तिवादिता से ग्रस्त होकर नहीं। 19.12.94 – राजबल, मुरादाबाद

ओरफिक डाईंग एन्ड प्रिंटिंग

यह फैक्ट्री प्लॉट नम्बर 120-121, सैक्टर 24 में स्थित है। मैं इस फैक्ट्री में दिसम्बर माह से काम कर रहा हूँ। फैक्ट्री में लगभग एक हजार मजदूर काम रहे हैं। इस फैक्ट्री में दस विभाग हैं, दसों विभागों में ठेकेदारों द्वारा मजदूरों से काम कराया जाता है। इसमें एक विभाग कपड़ा छापने का है, इस विभाग में जितने भी मजदूर काम करते हैं उन्हें 1500 रुपये मिलते हैं। इसमें महीने की चार छुट्टी और ओवर टाइम नहीं दिया जाता है जबकि काम 12 घन्टे करना पड़ता है। बाकी नौ विभाग में भी मजदूरों को 12 घन्टे काम करना पड़ता है पर वेतन सिर्फ 1100 रुपये दिया जाता है। न ही महीने की चार छुट्टी दी जाती हैं और ना ही कोई ओवर टाइम दिया जाता है। इस फैक्ट्री में मैंने देखा है कि ठेकेदार तथा बड़े मास्टर मजदूरों से अच्छा बरताव नहीं करते। मजदूरों को न्यूनतम वेतन देना तो दूर की बात है, मजदूरों द्वारा किये गये काम का पैसा भी सही समय पर नहीं मिलता है। इस फैक्ट्री में मजदूर आपस में ही लड़ाई-झगड़ा, गाली-गलौज करते रहते हैं। जो मजदूर ठेकेदारों व बड़े मास्टरों के चमचे होते हैं उन्हें तो कुछ नहीं कहा जाता पर जो मजदूर उनकी चमचागिरी नहीं करते उन्हें डाँट-फटकार तो सुननी पड़ती ही है, कभी-कभी तमाचे भी खाने पड़ते हैं। 30.12.94 – एक मजदूर

इन्टरव्यू- 1

(छोटा कद। दुबले-पतले। हँसमुख चेहरा। सर पर कम बाल। पचास के आस-पास। चुस्त। ईस्ट इंडिया कॉटन मिल में रोला प्रिन्टिंग डिपार्टमेंट में 25-26 साल से कार्यरत।)

पेट के लिए रोटी, बच्चों को पालने के लिए, अपनी इज्जत बनाने के लिए, परिवार पालने के लिये मैं नौकरी करता हूँ। अच्छा लगे या बुरा लगे जो भी काम मिला है वह तो करना ही है अगर बच्चों को पालना है तो। शरीर से तो मेरा आराम का काम है पर नजर और दिमाग का काम है। जब कोई मुझसे मिलने आ जाता है तो मैं उससे बात भी नहीं कर सकता जब तक कि कोई दूसरा मेरी जगह पर काम करने वाला नहीं आ जाता। हम ड्यूटी भी तब तक छोड़ कर नहीं आ सकते जब तक कोई हमारी जगह पर न आ जाये। मेरा काम शारीरिक तौर पर गधे जैसा बोझा ढोने वाला तो नहीं है परन्तु मुझे वह नजर व दिमाग पर ज्यादा जोर पड़ने की वजह से गधे जैसे वजन वाला लगता है।

कम्पनी का माहौल बुरा है। फरीदाबाद में ईस्ट इंडिया के बारे में तो सबको मालूम है ही। वेतन देने में लम्बी-लम्बी लाइन लगवाते हैं। एडवांस लेने में दस-पाँच दिन चक्कर कटवाते हैं। तकलीफों के बारे में हम चुप रहना ही बेहतर समझते हैं। बोल नहीं पाते हैं। विरोध करने की इच्छा तो होती है। जहाँ पर कोई जोर नहीं है वहाँ पर गुस्सा मजबूरी में घोट कर पीना ही पड़ता है। मजदूर विरोध करके करेंगे भी क्या जब मजदूरों की सुनने वाला ही कोई नहीं। ज्यादा बोलने पर गेट बन्द होने का डर रहता है। ज्यादा से ज्यादा केस लड़ने के अलावा कर ही क्या सकते हैं। हालाँकि पहले हमने सन् 1969 में वेतन बढ़ौतरी, डबल ओवर टाइम के लिए 22 दिन तक हड़ताल की। पुलिस ने ले जा कर रिवाड़ी के जंगल में छोड़ दिये और हम सब काफी पैदल चल कर आये थे। एक-दो बार गुड़गाँवा जेल भी गये हैं। फैक्ट्री स्तर पर हमने हड़तालें की हैं। बोनस के लिए, वेतन बढ़ौतरी के लिए, छँटनी के खिलाफ हम सबने मैनेजमेंट का विरोध किया है। इन सब में मैंने भी हिस्सा बराबर लिया। बहुत-सी कम्पनियों के वरकरों द्वारा किये गये मैनेजमेन्टों के विरोध मेरे सामने हुये। प्याली में, वैक्यूम ग्लास में, पेपर मिल में, ढाँढा में हुई हड़तालों में और जलूसों में मैंने भी भाग लिया था। गुडईयर पर जब गोली काँड हुआ था तब हम जलूस में गये थे। अमरीकन यूनिवर्सल की हड़ताल में, जलूस में भाग लिया पर पूरा याद नहीं रहा। सन् 1979 में फरीदाबाद बंद में मैं भी शामिल हुआ था। फरीदाबाद के बाहर किसी मजदूर संघर्ष का मुझे कोई अनुभव नहीं है।

पेट को रोटी जब पूरी नहीं होती तो ओवर टाइम की इच्छा तो रहेगी ही, भले ही मजबूरी में हो। ओवर टाइम वैसे तो मिलता नहीं है पर कभी-कभार महीना - दो महीना में मिल जाता है तो कर लेता हूँ। ड्यूटी के बाद मैं कोई पार्ट टाइम काम नहीं करता, न ही मेरी करने की इच्छा होती है। मेरी पत्नी घर पर खेती-बाड़ी का काम करती है। बच्चे भी गाँव में ही रहते हैं। लड़का दसवीं क्लास पढ़ कर नौकरी की बहुत तलाश किया पर नौकरी कहीं मिली नहीं इसलिए खेती का काम करता है। साल-दो साल में 15-20 दिन की छुट्टी ले कर मैं गांव चला जाता हूँ और अपने बच्चों के साथ समय बिताता हूँ। यहाँ मैं झुग्गी में रहता हूँ। ड्यूटी और सोने के अलावा मैं अपने लिए स्वयं खाना बनाता हूँ, अपने कपड़े धोता हूँ और खाली बैठ कर अपना बाकी समय बिताता हूँ। मैं मनोरंजन की कोई जरूरत महसूस नहीं करता। हाँ संगी-साथी आ जायें तो उनके साथ बैठ लेता हूँ या झुग्गियों के बाहर चौराहे पर अपने परिचितों के साथ बैठ लेता हूँ। गाँव में बच्चों के मनोरंजन के लिए रेडियो है। अपने संगी-साथियों में बैठ कर अपने दिल का गुबार निकाल लेना हूँ।

(जो मजदूर अपनी, अपने माहौल की बात कहना चाहते हैं वे हम से मिलें। इन्टरव्यू देने के लिए मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी में सम्पर्क करें। नाम देना अथवा नहीं देना वरकर की इच्छा के अनुसार। इस नये कॉलम पर पाठकों की टीका-टिप्पणी का स्वागत है।)

(पेज एक से जारी)

सब खुला दीखना चाहिये की महत्ता को स्थापित कर चुकी मैनेजमेंट की अत्याधुनिक रिसर्च ने प्रतीकों को भी शीघ्रता से हटाने के लिये अभियान शुरु किया है। फैक्ट्रियों के अन्दर मैनेजरों के केबिन खत्म करती पारदर्शित तेजी से बढ रही है। इससे फैक्ट्री के एक कोने से दूसरे कोने तक हर कोई एक-दूसरे को देख सकते हैं। अब न मैनेजर टेबल पर पैर पसार कर सिगरेट के कश ले सकेंगे और न मजदूर एक क्षण भी निगाहों से ओझल हो सकेंगे। वीडियो कैमरे ठीक हैं पर इनसानों की निगाहें फिर भी इनसानों की निगाहें होती हैं! वैसे मैनेजमेंटों की रिसर्च कमाल की चीज है — प्रोडक्शन लाइन पर 18 सैकेन्ड में 20 शारीरिक क्रियायें वरकर से करवाने लगी है। लगता है इन हालात में मैं अब थोड़े ही दिन का मेहमान हूँ इसलिये कान पास में करो तुम्हें राज की एक बात बताऊँ : पारदर्शिता में कुछ नहीं दीखता! महान सुधारकों ने सजा के तौर पर जिन्दा लोगों की खाल खींचने, आँख निकालने, हाथ काटने, सलीब पर टाँगने को बगावत के बीजों के लिये खाद-पानी सिद्ध किया। स्कूलों में बच्चों की डन्डों से धुनाई को भी उन्होंने इसी कैटेगरी में रखा। टिकाऊ नियन्त्रण के लिये मन पर कन्ट्रोल स्थापित करने को सर्वोपरि महत्व प्रदान करती सुधारकों की दूरदृष्टि की फसल अब लहलहाने लगी है। माता-पिता के आचार-विचार पुचकार कर घुट्टी में पिलाने तथा स्कूलों से डन्डों को दफा कर शिक्षा और दीक्षा को एकरूप करने के संग-संग रेडियो - टी वी - फिल्म - पत्र - पत्रिकाओं द्वारा प्रदत खाद - पानी का यह असर है कि **इस दुनियाँ के बाशिन्दों को मुझ जैसे, अदने कँटीदार तार जैसे प्रतीक अखरने लगे हैं पर जो हकीकत हर समय उनके सामने होती है वह इनसानों को नहीं दीखती।** लोगों के मनों पर, दिलो-दिमाग पर कन्ट्रोल उनके शरीरों पर भी कन्ट्रोल स्थापित करते हैं . . . लेकिन मुझे इस सब के बारे में थोड़ी शंका भी है। बढती अनुशासनहीनता के लिये मैं अंग-भंग की वकालत नहीं कर रहा पर डन्डा दीखना चाहिये, आम लोगों के लिये मिसाइल-विमाइल बहुत अमूर्त, रिमोट होती हैं ...

एक न्यूजपेपर रिपोर्ट

एक राष्ट्रीय अखवार के पाँचवें पन्ने के तीसरे कालम के निचले हिस्से में :

शान्तिपुर, 30 दिसम्बर, इन्डस्ट्रियल एरिया में एक व्यक्ति ने 3 बजे रेल से कट कर आत्महत्या कर ली। मरने वाला एक्सेल टूल्स का मजदूर था जिसे हिसाब लेने को कह कर सुवह ड्यूटी पर नहीं लिया गया था। साढे तीन हजार मजदूरों में से डेढ हजार की छँटनी के दौरान यह अपने किस्म की पहली दुर्घटना है। मृत मजदूर एक्सेल टूल्स में आठ साल से नौकरी कर रहा था और अपने पीछे दो बच्चे व पत्नी को छोड़ गया है।

अपने रोजमर्रा के जीवन में नजदीक से अथवा दूर से जिन चीजों को हम देखते हैं उनकी तह में मनुष्यों के बीच सम्बन्ध छिपे होते हैं। इनसानों के बीच का परस्पर विरोध और शक्ति के आधार पर निर्धारित होते उनके रिश्ते आमतौर पर चीजों के साथ व्यक्तियों के सम्बन्धों के रूप में अभिव्यक्त होते हैं।

मनुष्यों के क्रियाओं पर बेगार की बेड़ियों के दौर में भी महीने-भर चलने वाले त्यौहार, ब्याह-शादी और जन्म जैसे खुशी के अवसरों पर ही नहीं बल्कि मौत जैसे गम के मौकों पर भी प्रियजनों का हफ्तों एक जगह जुटना, दोस्तों-सम्बन्धियों से मिलने जाना वहाँ आठ-दस दिन ठहरना लिये था, साल में एक फसली इलाकों में तीन-चार महीने मेहनत। सिंचाई वाले इलाकों में दो फसली खेती ने साल में छह-सात महीने मेहनत . . .

फैक्ट्री में प्रोडक्शन साल के बारहों महीने। भाप-कोयला-मशीन की त्रिवेणी के संगम स्थल पर महीने-भर चलते त्यौहारों का दाह-संस्कार।

मशीन का ठहरना विकास का, प्रोग्रेस का रुकना। महीने में तीसों दिन काम। प्रियजनों का दायरा सिकुड़ने लगा।

गैस-बिजली की रोशनी — चौबीसों घन्टे चलती मशीनें। खुशी की मुस्कुराहटें ही नहीं, गमी के आँसू भी भाव-विहीन चेहरों में परिवर्तित।

तरक्की के लिये फिजूलखर्ची पर रोक जरूरी। ध्याड़ी में कमी। गम के मौकों पर ही नहीं बल्कि खुशी के अवसरों पर भी रस्मी खानापूर्ति।

विकास के लिये बचत आवश्यक। वेतन में कमी। ओवर टाइम के संग-संग पार्ट टाइम काम।

प्रोग्रेस के लिये सेविंग जरूरी। तनखा में और कमी। बढती संख्या में महिलाओं का मजदूर बनना।

एक एफ आई आर

FIR No. 15763792
दिनांक 31.12.94

थाणेदार चौकी नम्बर 5
शान्तिपुर इन्डस्ट्रियल एरिया

...30.12.94 को ढाई बजे दिन-दहाड़े टिंग टाँग इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड में 300 महिला मजदूरों ने अनुशासन का घोर उल्लंघन किया और फैक्ट्री मैनेजर, परसनल मैनेजर तथा दो सुपरवाइजरों की चप्पलों से पिटाई की और उन पर जी भर कर थूका। फैक्ट्री का सेक्यूरिटी स्टाफ हँसता रहा और अपना कर्तव्य नहीं निभाया।

जान-माल को गम्भीर खतरे के मद्देनजर टिंग टाँग इलेक्ट्रोनिक्स में पुलिस चौकी स्थापित कर दी गई है। श्रमिकों पर अपराधिक मामले दर्ज कर दिये गये हैं . . .

नवम्बर माह का वेतन 30 दिसम्बर तक नहीं देने के श्रमिकों के आरोप का मैनेजमेंट ने यह उत्तर दिया कि कम्पनी आर्थिक संकट में है और मैनेजमेंट पहले ही वरकरों से कह चुकी है कि ऐसे में मजदूरों को कुछ कुर्बानी देनी होगी।

हस्ताक्षर, इनवेस्टिगेशन अफसर

उन्नति के रथ की बढती रफ्तार। डेवलेपमेंट के मन्दिर में बलि चढ़ते दादा-दादी-नाना-नानी की लाइनें लग गई। बच्चे सौगात से आफत में रूपान्तरित — एक-दो, अरे वावा बस!

तरक्की की दौड़ जारी। बच्चों का बचपना शहीद। पेशेवर खिलाड़ी, कामयाब नाचने-गाने वाले, टूरिस्ट गाइड, स्थापित लेखक बनने के लक्ष्य लिये बिना जो बच्चे खेलते-कूदते, नाचते-गाते, घूमते-फिरते, इधर-उधर की किताबें पढ़ते हैं वे "समय गँवा रहे हैं, आवारागर्दी कर रहे हैं, नालायक हैं इसलिये प्रतियोगिता में पीछे छूट जायेंगे, बर्बाद हो जायेंगे"।

प्रोग्रेस के मामले में जो थोड़ी-बहुत ढील-ढाल हो सकती है उसकी भी प्रतियोगिता में गुँजाइश नहीं। होड़ माने लगातार खर्च में कटौती — सतत छँटनी, वेतन कटौती, वर्क लोड में वृद्धि।

बेलगाम होड़। मात्र जिन्दा रहने के लिये पुरुष-स्त्री-बच्चों द्वारा रोज आठ-आठ घन्टे ड्यूटी + ओवर टाइम + पार्ट टाइम, 30-36 घन्टों का वर्किंग डे। दिन में आज भी 24 घन्टे ही, और सौ साल पहले 8 घन्टे के वर्किंग डे के लिये आन्दोलन . . .

ओलम्पिक प्रतियोगिता। फैक्ट्री में मास प्रोडक्शन वाली फोर्ड - टेलर पद्धति द्वारा स्थापित कीर्तिमान, वरकर को मिनट में 45 सैकेन्ड कार्यरत रखने, को धूल चटाती लीन प्रोडक्शन वाली टोयोटा पद्धति ने मजदूरों को मिनट में 57 सैकेन्ड कार्यरत रख कर गोल्ड मैडल लिया। इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में ओलम्पिक जीतने के लिये एजाइल प्रोडक्शन के नाम से मैनेजमेंट रिसर्च द्वारा विकसित की जा रही पद्धति फैक्ट्रियों में 60 सैकेन्ड वाली मिनट में मजदूर को 80 सैकेन्ड कार्यरत रखने की ओर अग्रसर है।

और, आधुनिक अवतार स्वामी सन्त बाबा के मुखारबिन्दु से ईश्वर-अल्लाह-गॉड की वाणी : इस शरीर को यहीं छोड़ना है इसलिये इसे खूब रगड़ो। जितना हो सके शरीर को घिसो नहीं तो यह आराम का आदी हो जायेगा और आत्मा निर्मल-स्वच्छ-शुद्ध नहीं हो पायेगी, शरीर के मोह में लिप्त रहेगी इसलिये अनन्त में लीन-विलीन नहीं हो पायेगी।

हमारी क्रियाओं को निर्देशित करती धारावद्धता ने इन्हें संकुचित कर मात्र जिन्दा रहने के लिये क्रियाओं में सिकोड़ दिया है। इतना ही नहीं, असहनीय

(शेष पेज चार पर)

(पेज तीन का शेष)

तीव्रता ने हमारी इन क्रियाओं को हमारे स्वयं के मन व शरीर के लिये घातक बना दिया है। और जितनी अधिक व बोझिल क्रियायें हमारे हाथ - दिमाग प्रति मिनट करने को मजबूर किये जाते हैं उसी रफ्तार और कर्कशता से भोंपूओं से विकास, तरक्की, प्रगति डेवलेपमेंट, देश की - कम्पनी की उन्नति का शोर।

एक चार्जशीट

म ल /पी आर/1947/ 31.12.94

गुलाब सिंह
टोकन नम्बर 1994
पद – नट-बोल्ट आपरेटर
महाकाल लिमिटेड
शान्तिपुर इन्डस्ट्रियल एरिया

विषय : लव लैटर नम्बर 42, पैन्डिंग इन्क्वायरी सस्पैन्ड

आरोपित महोदय,

आपके सुपरवाइजर सतर्क सिंह को अपने आंख, कान, नाक, जीभ और दाँतों के नुकीलेपन के लिये किसी के सर्टीफिकेट की जरूरत नहीं है। यह साल पूरा भी नहीं हुआ है और 30.12.94 को नाइट शिफ्ट में 42 वीं बार आप अपने नट-बोल्ट ढीले करते रहे और श्री सतर्क सिंह के नट-बोल्ट टाइट करने की सार्वजनिक घोषणा रात ढाई बजे से सवा तीन बजे तक करते रहे। इससे चार बजे तक प्रोडक्शन जाम रहा। यह तो शिफ्ट इनचार्ज हरीशचन्द्र का कमाल रहा कि उन्होंने सुबह आठ बजे तक धकाधक करके प्रोडक्शन पूरा करवाया।

24 घन्टों के अन्दर-अन्दर जवाब दें कि देश और कम्पनी को नुकसान पहुँचाने वाले गम्भीर दुराचरण के लिये क्यों न आपको भूखा मरने के लिये बरखास्त कर परम्परा की मिसाल कायम रखी जाये।

विवेक राय, परसनल मैनेजर

हमें कार्यस्थलों पर वरकरों द्वारा मैनेजमेंटों के विरोध पर फख है, गर्व है क्योंकि यह जीवन को संकुचित करने के खिलाफ कदम हैं। मानव क्रिया को मात्र जिन्दा रहने के लिये क्रिया के संकीर्ण दायरे में कैद कर चुकी मैनेजमेंटों से पँगा लेना पुण्य है, पूजनीय है, सराहनीय है। इसलिये ऐ दोस्तो, विरोध को उत्सव का रूप दो, मेला बना दो।

इस अखबार के काम में हाथ बँटाने के लिये, अखबार के विस्तार के लिये आप :

– अखबार की सामग्री पर राय देना।

– अखबार में छपने के लिये सामग्री जुटाना।

– अखबार बाँटने में हिस्सा लेना।

– अखबार पर खर्च के लिये रुपये-पैसे देना।

19 जनवरी को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 जनवरी को रात 8 बजे इस अखबार के जनवरी अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होंगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।

जेलखाना बने सम्पूर्ण विश्व को स्वतन्त्र स्थान में परिवर्तित करने की इच्छा-क्रिया-प्रयास के लिये ऊँची दीवारों से घिरी छोटी-छोटी कोठड़ियों में बरसों से कैद रखे जाने पर भी संघर्षरत, व्यवस्था द्वारा व्यवस्था के लिये खतरनाक करार दिये गये जोहन पेरोटी, साल्वातोरे सिरिसिओं, जोह्न बॉवडन . . . नव वर्ष का अभिवादन। कामना है कि 1995 में आप जैसों की संख्या तेजी से बढ़े।

सामुहिक कदम

जिन्हें गौण माना जाता है, रोजमर्रा के कदम जिन्हें खबर नहीं माना जाता, मजदूरों द्वारा कार्यस्थल-रिहाइश-अन्य स्थान पर अपने आप उठाया गया छोटे से छोटा सामुहिक कदम हमारे विचार से मजदूरों के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसे कदमों के दौरान का अनुभव हमारे ज्ञान को बढ़ाता है, मैनेजमेंटों से टक्कर लेने की मजदूरों की क्षमता में वृद्धि करता है। अपने दम पर उठाये सामुहिक कदम के दौरान पता चले कमजोर करने वाले और ताकत बढ़ाने वाले कदमों की जानकारी ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुँचाना हम सब की ताकत बढाता है। डिपार्टमेंट-शिफ्ट-फैक्ट्री, बस्ती, रेलवे स्टेशन जैसे स्थानों पर उठाये गये छोटे से छोटे सामुहिक कदम की भी रिपोर्ट हमें दें ताकि इस अखबार में छप कर वह कई अन्य मजदूरों की जानकारी में आ सके। फरीदाबाद में मजदूरों के सामुहिक कदमों की रिपोर्टें मई 94 अंक से अलग से दी जा रही हैं और इस बीच एस्कोर्ट्स रेलवे डिविजन, पलवल साइड से डेली आते एस्कोर्ट्स के सब प्लान्टों के वरकरों, झालानी टूल्स में फस्ट - सैकेन्ड - थर्ड प्लान्टों के मजदूरों और स्टाफ, गुडईयर, बाटा, एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट, कैन्टीन वरकरों, के सरकारी डॉक्टरों, हितकारी पोट्रीज, मीनाक्षी डाईंग एन्ड प्रिंटिंग, फोर्ड, केल्विनेटर, ईस्ट इंडिया पावरलूम, बत्रा एसोसियेट्स में उठे सामुहिक कदमों की रिपोर्टें छप चुकी हैं। हम आशा करते हैं कि 1995 में इस प्रकार की रिपोर्टों से अखबार भरा रहेगा।

★ **एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट** में सी एन सी डिपार्टमेंट के मजदूरों के सामुहिक विरोध की वजह से मैनेजमेंट अप्रैल 94 की तीन साला एग्रीमेंट अनुसार नवम्बर-अन्त तक वर्क लोड नहीं बढ़ा सकी तो 5 दिसम्बर को मैनेजमेंट ने लीडरों और सी एन सी वरकरों के साथ साँझी मीटिंग रखी। मीटिंग में लीडरों ने मजदूरों से कहा, " आप लोग प्रोडक्शन बढाओ।" वरकरों ने कहा, "साहब, प्रोडक्शन नहीं बढ सकता, गुंजाइश नहीं है।" लीडरों ने कहा, "इस बार तो प्रोडक्शन बढाना ही होगा, ऐसी हमने एग्रीमेंट की है।" मजदूरों ने लीडरों से कहा, "आप खुद शॉप फ्लोर पर आओ और देखो। टाइम स्टडी करवा लीजिये, जो प्रोडक्शन निकल सकता है वह हम देंगे।" यही बात मजदूरों ने मैनेजमेंट से कही। लेकिन न तो यूनियन लीडर और न ही मैनेजमेंट इसके लिये तैयार हुये। बीस-पच्चीस सी एन सी वरकरों को साढे तीन बजे से प्रोडक्शन बढाने के लिए राजी करने में लगे लीडरों और मैनेजमेंट की बात जब फँस गई तब साढे छह बजे अकस्मात लीडर यह कह कर चलते बने कि प्रोडक्शन तो बढाना ही होगा। और मैनेजमेंट ने सी एन सी वरकरों को वेतन काटने की धमकी दी है।

★ **बाटा फैक्ट्री** में रेडी स्टॉक वरकरों पर अतिरिक्त वर्क लोड डालने के लिये 13 दिसम्बर को मैनेजमेंट ने आर पेयर पैक करने वाले 6 वरकर हटा लिये और फ्रेश पेयर पैक करने वाले मजदूरों से कहा कि आर पेयर की स्टैम्पिंग व पैकिंग भी वे ही करें। वरकरों न इसका विरोध किया। इस पर मैनेजमेंट ने कनवेयर बैल्ट पर आर पेयर चुन-चुन कर रखे और पहले उन्हें स्टैम्प व पैक करने पर जोर दिया। मजदूरों ने आर पेयरों को एक तरफ धकेल कर फ्रेश पेयर पैक करना जारी रखा।

अफसरों की दादागिरी के खिलाफ शोर शुरु होने पर मैनेजमेंट पीछे हटी। और, मैनेजमेंट ने नोटिस लगाया कि मजदूरों ने सुबह आठ से दस बजे तक गैर कानूनी हड़ताल की है जिसके लिये वेतन काटा जायेगा। इधर सब रेडी स्टॉक वरकरों ने साइन करके मैनेजमेंट को विरोध-पत्र दिया और अतिरिक्त वर्क लोड नहीं उठाने का फैसला किया।

बाटा मैनेजमेंट ने 13 दिसम्बर से नोटिसों का ताँता लगा रखा है जिनमें पैकिंग डिपार्टमेंट के वरकरों पर एक घन्टे काम नहीं करने के आरोप और डिसिप्लिनरी एक्शन की धमकियाँ हैं। मजदूरों के सामुहिक विरोध को दबाने के लिये पैकिंग वरकरों का वेतन काट कर बाटा मैनेजमेंट ने मजदूरों को 1995 का तोहफा दिया है।

★ **झालानी टूल्स** फस्ट प्लान्ट में स्टाफ ने 17 दिसम्बर को 2 बजे टूल डाउन स्ट्राइक शुरु की और 19 को 2 बजे तब काम शुरु किया जब मैनेजमेंट ने स्टाफ का सितम्बर माह का वेतन देना आरम्भ किया। सैकेन्ड प्लान्ट में स्टाफ ने 22 दिसम्बर को टूल डाउन शुरु की तब 30 दिसम्बर तक सैकेन्ड के स्टाफ को सितम्बर का वेतन दिया गया। फिर भी, बकाया के भुगतान के लिये सैकेन्ड प्लान्ट के स्टाफ की टूल डाउन जारी। झालानी टूल्स थर्ड प्लान्ट में स्टाफ द्वारा टूल डाउन...

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी – 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।